RJPP, Vol. 15, No. 2, 2017, ISSN (P) : 0976-3635, (e) :2454-3411, Impact Factor 4.0000 (ICRJIFR)

UGC Approved Journal No. 43279

गाँधी जी के साम्ययोगी विचारों का तात्विक विश्लेषण

डॉ० संजय कुमार सिंह*, विरेन्द्र कुमार**

**एसो0 प्रोफे0,, **शोध छात्र, इतिहास विभाग, एम.एम.एच. कॉलिज, गाजियाबाद।*

सारांश

स्वतंत्रता प्राप्ति के पष्चात् भारत में जिस प्रकार के परिवर्तनों की शुरूआत हुई उनमें सबसे महत्वपूर्ण था, भारतीय समाज का चरित्र कैसा हो? इसकी अवधारणा को स्पष्ट करते हुए बुद्धिजीवी वर्ग ने ब्रिटिशकालीन संघर्ष के दौरान गांधी जी के आदर्शों को अपनी कार्य योजना में समाहित करने का प्रयास किया। जो एक वर्गविहीन समाज के पक्षधर थे। गांधी जी ने अपने विचारों को फलीभूत करने के लिए समाज को चार स्तम्भों पर स्थापित करने का प्रयास किया–सत्य, अहिंसा, समाजवाद और साम्यवाद। इन आदर्शों के आधार पर गांधी जी एक ऐसे समाज का निर्माण चाहते थे जिसमें सभी मनुष्यों का उदय हो। सर्वोदय के इसी सिद्धांत को गांधी जी ने अपने विचारों में समन्वित करके भारतीय समाज के पुनःनिर्माण का प्रयास किया। प्रस्तुत आलेख में गांधी जी के इन्ही विचारों का विश्लेषण किया गया है। भूमिदान यज्ञ के पीछे जो मूलभूत विचार हैं उसे 'साम्ययोग' कहा गया। इस साम्ययोग के आधार पर गाँधी जी सर्वोदय समाज का निर्माण करना चाहते थे। सर्वोदय समाज ऐसा समाज है जहाँ बहुसंख्यकों का नहीं, वरन् सारे समाज का हित हो। गाँधी जी ने आर्थिक पद्धति के विषय में सर्वोदय दर्शन की भूमिका में आज की प्रचलित पद्धतियों के गुणात्मक स्वरूप को माननीय मूल्यों के आधार पर निर्मित किया है। पूँजीपतियों द्वारा पूँजी के दुरूपयोग की बात लोगों के ध्यान में आयी तब समाजवाद का जन्म हुआ, यह कहना गलत है। गाँधी जी ने कहा 'समाजवाद' और साम्यवाद आदि पश्चिम के सिद्धांत जिन विचारों पर आधारित हैं, वे हमारे तत्संबंधी विचारों से बुनियादी तौर पर अलग हैं। इसलिए हमारे समाजवाद या साम्यवाद की रचना अहिंसा के आधार पर और मजदूरों तथा पूँजीपतियों या जमींदारों तथा किसानों के मीठे सहयोग के आधार पर होनी चाहिए। यदि अहिंसा के आधार पर साम्यवाद के अर्थ का पता लगाया जाए तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि 'वर्ग विहीन समाज'। यह बेशक उत्तम आदर्श है, उसके लिए अवश्य कोशिश करनी चाहिए। लेकिन जब इस आदर्श को प्राप्त करने के लिए कोई हिंसा के प्रयोग करने की बात करने लगता है तब मेरा रास्ता उससे अलग हो जाता है। जनता पर जबरदस्ती लादा जाने वाला साम्यवाद भारत को रूचेगा नहीं। भारत की प्रकृति के साथ, उसका मेल नहीं किंतु यदि साम्यवाद बिना हिंसा के आये तो हम उसका स्वागत करेंगे। गाँधी जी ने कहा ''मेरा दृढ़ विश्वास है कि हिंसा की नींव पर किसी स्थायी रचना का निर्माण नहीं हो सकता।'' गाँधी जी ने पुनः कहा कि मैं सारे समाज को अपने मत का बनाने तक रूकूंगा नहीं।[1]

महत्वपूर्ण शब्द :- *साम्ययोग, सर्वोदय, समाजवाद, साम्यवाद, सत्य–अहिंसा, अहिंसक स्वराज, ट्रस्टिशिप, सामाजिक उत्थान और आर्थिक समानता।*

शोधपत्र का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैः

डॉ० संजय कुमार सिंह, विरेन्द्र कुमार, ''गाँधी जी के साम्ययोगी विचारों का तात्विक विश्लेषण'', RJPP 2017, Vol. 15, No.2, pp. 85-90 http://anubooks.com/?page_id=2004 Artcile No. 12(RP561)

प्रस्तावना

गाँधी जी ने बताया था कि सच्चा समाजवाद तो हमें पूर्वजों से प्राप्त हुआ है जो हमें वे सिखा गए हैं ''सब भूमि गोपाल की है'' जिसमें कहीं मेरी तथा तेरी सीमाएँ नहीं हैं। आधुनिक संदर्भ में गोपाल का तात्पर्य राज्य या जनता से है।

साम्यवाद भी ईशोपनिषद् के पहले मंत्र में स्पष्ट है। जब कुछ सुधारकों का परिवर्तन पद्धति में विश्वास नहीं रहा जब उसे वैज्ञानिक समाजवाद कहा गया।

समाजवाद में समाज के सब सदस्य बराबर होते हैं। कोई भी ऊँचा या नीचा नहीं होता, यही समाजवाद है। इसमें राजा और प्रजा, गरीब तथा अमीर, मालिक तथा मजदूर सभी बराबर होते हैं। समाजवाद में भेदभाव नहीं किया जाता है। समाजवाद स्फटिक की तरह शुद्ध है। राजा का सिर काट डालने से राजा एवं प्रजा बराबर नहीं हो जायेंगे। हम असत्य से सत्य को प्राप्त नहीं कर सकते हैं। सत्य के आचरण द्वारा ही हम सत्य को प्राप्त करते हैं। अहिंसा तथा सत्य दोनों ही एक चीज हैं। अहिंसा सत्य में तथा सत्य अहिंसा में छिपा हुआ है। अहिंसा तथा सत्य, एक सिक्के के दो पहलू के समान हैं। एक ओर अहिंसा है तथा दूसरी तरफ सत्य है।[2]

गाँधी जी ने 1933 में 'सविनय कानून भंग आंदोलन' स्थगित कर दिया, उसके बाद कांग्रेस में समाजवादी दल का उदय हुआ। गाँधी जी का कहना था कि मजदूर या कामगार अपने अधिकारों को जाने और आग्रह के साथ उन्हें बताने का तरीका भी जाने। उत्पादन, वितरण तथा विनिमय के सारे साधनों के अधिकाधिक राष्ट्रीयकरण की मांग इतनी अविचारपूर्ण है कि वह स्वीकार नहीं की जा सकती है। गाँधी का विचार था कि मैं ''जमींदारी के अंत'' का पक्षधर नहीं हूँ कि जमींदारों और तालुकदारों से उनकी जमीने छीन ली जाए। मैं जमींदारों और उनके काश्तकारों के बीच उचित एवं न्यायपूर्ण संबंध स्थापित हो, यह चाहता हूँ। गाँधी जी मुख्य आधारभूत उद्योग–धंधों के राष्ट्रीयकरण में विश्वास रखते थे। गाँधी जी का विश्वास था कि जमींदारों और बेजमीनों–दोनों का ही हृदय परिवर्तन होना चाहिए। जमींदारों के लिए केवल आर्थिक हितों का त्याग करने का प्रश्न है जबकि बेजमीनों के लिए संबंध बदलने की बात है। गाँधी का विश्वास था कि जमींदारों तथा पूंजीपतियों का हृदय परिवर्तन हिंसा से नहीं, वरन् केवल समझा–बुझा कर ही कर सकते हैं। गाँधी का विचार था कि आपको धन जमा करने का तो अधिकार है परंतु आप उस धन को मनमाने ढंग से खर्च नहीं कर सकते हैं। उन्हें अपने धन का ट्रस्टी बन जाना होगा। गाँधी जी का कहना था कि यदि धन अन्याय से दूसरों का शोषण करके, जमा किया गया होगा तो मैं उसे छीन लूंगा।[3]

गाँधी जी का कहना था कि आज के समाज में पूंजीपति और मजदूर के हितों में इसलिए संघर्ष है कि पूंजीपति मजदूर को कुछ भी दिए बिना लाखों रूपए कमाने की सोचता है। गाँधी का मत था कि पूंजीपतियों को अपनी पूंजी लगाने का लाभ अवश्य मिले किंतु मजदूरों को वेतन देने का भी विश्वास दिलाना होगा। गाँधी जी राज्य द्वारा उत्पादन तथा पूंजीपतियों द्वारा उत्पादन, दोनों को ही महत्व प्रदान करते थे। उनका कहना था कि यदि केवल राज्य द्वारा उत्पादन होगा तो लोग नैतिक और बौद्धिक दृष्टि से कंगाल हो जायेंगे वे सभी अपनी जिम्मेदारी भूल जायेंगे।

इसलिए गाँधी जी पूंजीपतियों द्वारा भी उत्पादन पर जोर देते थे तथा उन्हें अपनी जायदाद का ट्रस्टी बनने पर जोर देते थे।

गाँधी जी अहिंसा के जरिये लोगों का हृदय परिवर्तन करना चाहते थे। गाँधी जी का विश्वास था कि आज हिन्दुस्तान में जो लोग समाजवाद को अपना ध्येय मानते हैं, उनसे पहले ही मैं समाजवाद को स्वीकार कर चुका था। मेरा समाजवाद सहज एवं स्वभाविक था। वह मेरे अहिंसा में अटल विश्वास का परिणाम था। संसार का कोई भी व्यक्ति जो सक्रिय अहिंसा में विश्वास करता है, सामाजिक अन्याय को, फिर वह कहीं भी क्यों न होता हो, बर्दाशत नहीं कर सकता जबकि पाश्चात्य देशों के विचारक अपने सिद्धांतों को हिंसा के जरिए ही अमल में ला सकते हैं।

गाँधी जी का यह मानना था कि कमजोर से कमजोर व्यक्ति से हम जोर जबरदस्ती के आधार पर सामाजिक न्याय का पालन नहीं करा सकते हैं। पतित से पतित लोगों को भी यदि सही तालीम दी जाए तो अहिंसक साधनों द्वारा सब प्रकार के अत्याचारों का प्रतिकार किया जा सकता है। उसका अहिंसक असहयोग ही मुख्य साधन है। कभी–कभी यह भी देखने को आता है कि असहयोग भी उतना ही कर्त्तव्य रूप हो जाता है जितना सहयोग। जिस चीज को हिंसा के जरिए कभी नहीं पाया जा सकता, वही अहिंसात्मक असहयोग द्वारा सिद्ध या प्राप्त की जा सकती है जिसका परिणाम होता है कि अत्याचारियों का हृदय परिवर्तन भी हो सकता है।

गाँधी जी का यह विश्वास था कि धनिकों के साथ कभी भी जोर–जबरदस्ती न की जायेगी ऐसा विश्वास डालना होगा और निर्धनों को यह सिखाना होगा कि उनकी मर्जी के खिलाफ कोई भी जबरदस्ती काम नहीं ले सकेगा। वे अहिंसा की कला को सीखकर अपनी स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं।

गाँधी जी का विश्वास था कि जो चीज लाखों लोगों को नहीं मिलती, उसे हमें दृढ़तापूर्वक इंकार कर देना चाहिए। त्याग की यह भावना हमें एकाएक नहीं मिलती है। सर्वप्रथम तो हमें यह मनोवृत्ति जागृत करनी होगी जिन सुख–सुविधाओं का लाखों लोग उपयोग नहीं कर सकते हैं उसका हमें उपयोग नहीं करना चाहिए।

गाँधी जी का कहना था कि प्रत्येक समाज में हर एक व्यक्ति अपनी शक्तियों का उपयोग व्यक्तिगत स्वार्थ साधने के लिए नहीं बल्कि सबके कल्याण के लिए कार्य करे, तो निश्चित रूप से ही समाज की सुख समृद्धि होगी। धनवान् व्यक्ति जो करोड़ों रूपये कमाए, उनका उद्देश्य समाज के सभी लोगों के कल्याण पर खर्च करना हो जाए तो निश्चित रूप से ही समाज का कल्याण होगा।[4]

उपर्युक्त कथनों को देखने से यह स्पष्ट होता है कि समाज के अधिकांश लोगों को जो वस्तु उपलब्ध नहीं होती है, उसका उपयोग धनवान् लोगों को नहीं करना चाहिए तभी समाज में समानता की भावना तथा कल्याण का प्रभावकारी रूप हमें दिखायी देता है। गाँधी जी की सलाह थी कि पूंजीपतियों को चाहिए कि वे अपने कमाए गए धन का अधिकाधिक उपयोग समाज के कल्याणकारी कार्यक्रमों में करें, तभी लोगों के जीवन स्तर में सुधार तथा असमानता को कम किया

जा सकता है।

गाँधी जी का विचार था कि समाज में सभी लोग पैदा होते हैं, सभी को कार्य करने का समान अवसर प्राप्त होना चाहिए, किन्तु प्रकृति की यह विडम्बना है कि सभी लोगों की क्षमता एक समान नहीं होती है। बुद्धिशाली या संपत्तिशाली लोगों को यह चाहिए कि समाज के सभी लोग उपकार या कल्याण में लगे जिससे राज्य का कार्य सुचारू रूप से चल सके। बुद्धिशाली आदमी को चाहिए कि अपनी कमाई का अधिकांश भाग राज्य की भलाई के लिए लगाए, तभी कल्याणकारी कार्य को आसनी से किया जा सकता है।

गाँधी जी यह चाहते थे कि समाज में सभी लोगों का दर्जा एक समान बना रहे, कोई भी ऊँच–नीच की भावना न हो। मजदूरी करने वाले लोगों को समाज ने सैकड़ों वर्षों से सभ्य समाज से अलग रखा है तथा उन्हें नीचा दिखाने की मनोवृत्ति रही है। गाँधी जी का मत था कि बुनकर, किसान एवं शिक्षक के लड़कों में कोई भी भेदभाव की भावना होने नहीं दूंगा।

गाँधी जी समाज के सभी वर्गों के बीच समानता की भावना को बनाए रखना चाहते थे ताकि समाज में किसी भी प्रकार का भेदभाव न हो, समाज के सभी लोगों का आर्थिक एवं सामाजिक उत्थान हो। आर्थिक समानता से तात्पर्य गाँधी जी का यह था कि पूंजी तथा मजदूरी के बीच झगड़ों को हमेशा के लिए मिटा दिया जाये। यह झगड़ा तथा भेदभाव तभी कम किया जा सकता है जबकि संपत्तिशाली वर्ग के लोगों के पास जमा संपत्ति को कम किया जाए तथा गरीब वर्ग, जिनकी संख्या करोड़ों में है उनकी संपत्ति को बढ़ाया जाये। जब तक इन दोनों के बीच भेदभाव या अंतर बना रहेगा तब तक अहिंसा की बुनियाद पर चलने वाली राज्य व्यवस्था कायम नहीं रह सकती है। धनवानों को अपनी खुशी से सबके कल्याण के लिए, सबको साथ मिलाकर कल्याण कार्यों के लिए धन का व्यय करना होगा तभी देश में समानता स्थापित होगी अन्यथा देश में हिंसक और खूनी क्रांति होकर रहेगी।

अहिंसक स्वराज्य किसी अच्छे मुहूर्त में अचानक आसमान से नहीं टपक पड़ेगा, बल्कि जब हम सब मिलकर एक साथ अपनी मेहनत से एक–एक ईंट रखेंगे तभी स्वराज्य की इमारत बनकर तैयार होगी।

गाँधी जी ने कहा कि आज के अमीर और गरीब के भेदभाव से मेरे दिल को बड़ी चोट पहुँचती है। विदेशी नौकरशाही और देष के रहने वाले शहरी लोग, गाँवों के गरीबों का शोषण करते हैं। गाँव वाले अन्न पैदा करते हैं किंतु स्वयं खाने के लिए मरते हैं। हर एक आदमी को पौष्टिक भोजन, रहने के लिए अच्छा आवास, बच्चों की शिक्षा के लिए हर तरह की सुविधाएं और चिकित्सा की भी सुविधा प्राप्त होनी चाहिए। गाँधी जी की आर्थिक समानता की यही कल्पना थी। गाँधी जी का विचार था कि गरीबों की जरूरतें पूरी हो जाए, फिर लोग जरूरत से ज्यादा रखें, तो कोई हर्ज नहीं है।[5]

इस प्रकार हम देखते हैं कि गाँधी जी ने गाँव में रहने वाले लोगों के सामाजिक कल्याण पर विशेष बल दिया ताकि ग्रामीण निर्धन जनसंख्या के जीवन स्तर में सुधार हो तथा लोगों को सामान्य न्यूनतम जीवन स्तर व्यतीत करने की हर सुविधा उपलब्ध हो जाए। गाँधी जी गरीब और

अमीरों के बीच बढ़ते हुए गतिरोधों को कम करने के पक्षधर थे ताकि देश में कटुता न बढ़े तथा प्रेम व्यवहार का वातावरण बना रहे।

गाँधी जी का विश्वास था कि राज्य सत्ता पाने वाले लोगों से वे समानता के सिद्धांत के पालन कर अमल करवायेंगे। उनका विश्वास था कि राज्य प्रजा की रक्षा करेगा न कि अपनी शक्ति या आज्ञा को जबरदस्ती ला देगा। गाँधी जी ने कहा कि मैं अपनी प्रेम शक्ति से लोगों को अपनी बात समझाऊंगा न कि घृणा से। इस प्रकार वे अहिंसा द्वारा आर्थिक समानता लाने के इच्छुक थे।

गाँधी जी का विश्वास था कि देश में भयंकर आर्थिक असमानता है। समाजवाद के मूल में आर्थिक समानता है। कुछ लोगों के पास करोड़ों रूपये तथा शेष के पास खाने को सूखी रोटी भी नहीं, ऐसी भयानक असमानता में रामराज्य की कल्पना नहीं की जा सकती है। इस प्रकार हम यह देखते हैं कि गाँधी जी अधिकांश गरीब जनता को खुशहाल तथा स्वावलम्बी बनाना चाहते थे ताकि देश में आर्थिक समानतारूपी रामराज्य की प्राप्ति की जा सके तथा सभी वर्गों के लोगों का जीवन स्तर सुधर सके।

गाँधी जी पूंजी का संकेन्द्रण कुछ लोगों के हाथों केन्द्रित रहने पर आपत्ति करते थे तथा पूंजी का वितरण समाज के कमजोर वर्गो तक करने पर पक्षधर थे तभी आय का वितरण समान होगा तथा सभी को सामाजिक न्याय की प्राप्ति आसानी से हो सकेगी।

गाँधी जी का विचार था कि आर्थिक समानता का यह अर्थ नहीं कि समाज में सभी मनुष्यों के पास समान संपत्ति हो। उनका कहना था कि इतनी संपत्ति हो कि अपनी न्यूनतम आवश्यकताएं पूरी कर सकें। गाँधी जी अहिंसा के द्वारा आर्थिक समानता को प्राप्त करने की बात करते थे। जिसने जिस आदर्श को अपनाया हो वह उससे अपने जीवन में आवश्यक परिवर्तन करे। हिन्दुस्तान की गरीब जनता के साथ अपनी तुलना करे, वह अपनी आवश्यकताएं कम करें, अपनी धन कमाने की शक्ति को अंकुश में रखे, ईमानदारी से धन कमाएं। सट्टे की मनोवृत्ति हो, तो उसका त्याग करें। अपने जीवन को संयमी बनायें, तभी आर्थिक समानता का सही रूप हमें दिखायी देगा।[6]

आर्थिक समानता के मूल में है अमीरों का ट्रस्टीशिप। जिस आदर्श के अनुसार धनिक को अपने पड़ोसी से एक भी कौड़ी ज्यादा रखने का अधिकार नहीं है। यदि वह रखता है तो क्या अतिरिक्त धन उससे ले लिया जाए, इसे प्राप्त करने के लिए हिंसा का सहारा ही लेना पड़ेगा। गाँधी जी का अहिंसक मार्ग यह कहता है कि अपनी आवश्यकता से अधिक का धन वह अपनी प्रजा को ट्रस्टी बना कर सौंप दे। जब धनिक अपने आपको समाज सेवक बनायेगा, समाज के कल्याण को बढ़ाने का प्रयत्न करेगा, तभी उसकी कमाई में शुद्धता दिखाई देगी। उसके साहस में भी अहिंसा परिलक्षित होगी। वास्तव में अहिंसा का व्यापक रूप नहीं दिखायी देता है। अहिंसा तो व्यक्तिगत रूप में विकसित की जा सकती है। अहिंसा एक सामाजिक धर्म है, इसे इसी आधार पर विकसित किया जा सकता है।[7]

संसार का कोई देश हो, कोई उद्योग, चाहे कितना ही छोटा हो, थोड़ी–बहुत हिंसा के

बिना संभव नहीं होगा। हिंसा होना स्वाभाविक है, किन्तु हिंसा को कम से कम किया जाना चाहिए। जो कोई भी व्यक्ति अहिंसा में विष्वास रखता है, वह ऐसे धंधे में लगेगा जिसमें कम से कम हिंसा हो।[8]

भारतीय समाज को शांति मार्ग पर चलते हुए सच्ची प्रगति प्राप्त करनी हो तो धनिक वर्ग को यह स्वीकार करना होगा कि किसानों के भीतर भी वही आत्मा है जैसी कि उसके शरीर में है। पूंजीपति अपनी धन–दौलत के कारण गरीबों से श्रेश्ठ नहीं है। उन्हें चाहिए कि अपने धन का उपयोग किसानों की भलाई के लिए करे।

गाँधी जी यह कहा करते थे कि मैं पूंजीपतियों तथा जमींदारों का अहिंसा के आधार पर ह्रदय परिवर्तन करना चाहता हूँ। कम से कम संघर्ष का रास्ता आदमी को लेना चाहिए जमीन पर मेहनत करने वाले गरीब किसानों तथा मजदूरों को जब अपनी मेहनत की ताकत की पहचान होगी तब ही जमींदारों की बुराईयों का बुरापन दूर होगा।[9]

गाँधी जी का कथन था कि समाजवादी को सत्य और अहिंसा की प्रतिमूर्ति होना चाहिए, ईश्वर के प्रति सच्ची श्रद्धा, भक्ति होनी चाहिए। अहिंसा का पालन केवल व्यक्ति ही कर सकता है वह भी विरले व्यक्ति। गाँधी जी यह कहा करते थे कि मैं राज्य की सत्ता वृद्धि को बहुत भयभीत दृष्टि से देखता हूँ, क्योंकि वह तो शोषण को कम करके लाभ पहुंचाती है परंतु मनुष्य के व्यक्तित्व को नष्ट करके वह मानव जाति को बड़ी से बड़ी हानि पहुंचाती है।

गाँधी जी के समाजवाद का अर्थ है ''सर्वोदय''। मैं गूंगे, बहरे और अंधों को मिटाकर उठना नहीं चाहता जबकि अमेरिका का एकमात्र मकसद भौतिक उन्नति करना है। गाँधी जी का विश्वास था कि प्रत्येक व्यक्ति को अपना विकास करने की पूर्ण आजादी होनी चाहिए। आजादी नीचे से शुरू होनी चाहिए। हर एक गाँव में मजदूरी सल्तनत या पंचायत का राज्य होगा। उसके पास पूरी सत्ता तथा ताकत होगी। हर एक गाँव को अपने पांव पर खड़ा होना होगा, अपनी जरूरतों को खुद पूरा करना होगा ताकि वे अपना व्यवसाय खुद चला सके तथा स्वावलम्बी बन सके। जब तक ईश्वर पर विश्वास न होगा तक तक सत्य और अहिंसा पर चलना मुश्किल होगा।[10]

सन्दर्भः–

1. *विनोवा, 'सर्वोदय और साम्यवाद', पृष्ठ–33*
2. *अमृत बाजार पत्रिका (अंग्रेजी दैनिक, कलकत्ता), 2 अगस्त, 1934*
3. *हरिजन, 'अंग्रेजी साप्ताहिक', 13 मार्च, 1937*
4. *मेरा समाजवाद, गाँधी जी, नवजीन, प्रकाशन, अहमदाबाद, 1959, पृष्ठ–10–11*
5. *मेरा समाजवाद, गाँधी जी, पृष्ठ–14*
6. *हरिजन सेवक, 20 अप्रैल, 1940*
7. *यंग इण्डिया, 13 अक्टूबर, 1921*
8. *रचनात्मक कार्यक्रम, 1959, पृष्ठ–40–42*
9. *दि मार्डन रिव्यू, 1935, पृष्ठ–412*
10. *दी बॉम्बे क्रॉनिकल, दिसम्बर 12, 1945*